साहित्य अकादमी के वेबलाइन मंच से काव्य पाठ करते कवि .

साहित्य अकादमी के वेबलाइन मैथिली मंच से कवियों ने किया कविता पाठ

झंझारपुर. साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा वेबलाइन कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत 'मैथिली कवि सम्मेलन' कार्यक्रम का ऑनलाइन आयोजन किया गया. साहित्य अकादमी प्रकाशन विभाग के उप सचिव डा. एन सुरेश बाबू ने गोष्ठी में भाग लेने वाले तीनों विद्वान साहित्यकार कवियों का अकादमी की ओर से स्वागत करते हुए सर्वप्रथम कवियित्री कुमकुम झा को आमंत्रित किया. काव्य गोष्ठी की शुरुआत राम सीता के प्रसंग को लेकर रचित अपनी सुंदर रचना से की. साहित्य अकादमी के वेबलाइन मंच पर दीप शिखा राष्ट्रीय सम्मान के अलावा हिंदी एवं मैथिली के कई प्रतिष्ठित मंचों से सम्मानित कवि डा. संजीव शमा को आमंत्रित किया गया. उन्होंने अपनी पहली रचना 'आह्वान' शीर्षक से 'आउ क्रांतिवीर मिथिला कें बचेबाक लेल, जराऊ विजय दीप अपन माटि पर रहबाक लेल' सुनाकर सुधि श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया. कवि सम्मेलन में साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार के अलावा दर्जनों मैथिली मंच से सम्मानित कवि नारायण झा ने 'काल' शीर्षक कविताओं की पंक्ति 'क्षुधा-स्वादक प्रतिपूर्ति लेल असंतोषक चूल्हि पर, सिझाओल जाए लागल जीव-श्रृंखला कें अपन भक्ष्य बना' सुनाया. रचना की दूसरी कड़ी के रूप में 'एहि वैश्विक बिहाड़िक बीच चलि रहल छैक फुशि खबरिक बिरों सेहो, मनोमष्तिष्कमे स्वतः उत्पन्न भए जाइत छैक डराओन दृश्य अनन्त, जैसी सुंदर पंक्तियों को सुनाकर मानव मन को सोचने पर मजबूर कर दिया. मिथिलांचल के तीन कवि कुमकुम झा, डा. संजीव शमा और नारायण झा ने मैथिली भाषा में अपनी कविता का पाठ किया.